वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल – 2019

* मनुष्य जीवन के चार बड़े–बड़े पड़ाव
* किडनी को ऐसे रख सकते हैं स्वस्थ
* मनुष्यात्मा की नीच और उच्च गतियां और उनके जुदा जुदा फल
* क्या हम अन्धे पैरोकार तो नहीं?
* पति पत्नी के सम्बन्ध का आधार
* जीवन पथ कुछ और है।
* शुभ संग्राम

देव बाणी

जो मनुष्य जितना नीच होता है, उतना ही वह स्वार्थ से भरा हुआ होता है। और इसीलिए स्वार्थ से परिपूर्ण नीच जनों के द्वारा किसी समाज वा देश का कोई हित साधन नहीं हो सकता जो जन जितना स्वार्थ त्याग करता है, वह उतना ही उच्च बनता है और अपना और औरों का हित साधन करता है। हमारे सामाजिक जनों के भीतर भी स्वार्थ त्याग का जितना भाव बढ़ेगा, उतना ही उनका और समाज का हित साधन होगा।

अहं संस्कृत शब्द है, इस का अर्थ है "मैं"। पर भी संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है "और"। मैं और पर एक नहीं। जब तक किसी मनुष्य के हृदय से केवल इस प्रकार की आकांक्षा उत्पन्न होती रहती है, कि मैं अपनी वासना वा उत्तेजना को चरितार्थ करूं, मैं अपना आराम वा सुख लाभ करूं, मैं अपना फायदा देखूं, इस से दूसरे को चाहे कैसा ही अनुचित दुख मिले, अथवा कैसी ही अनुचित हानि पहुँचे।" तब तक उसके भीतर केवल मैं का अधिकार रहता है। यह "मैं" का भाव जब तक काम करता है, और मनुष्य अपनी इस "मैं" के द्वारा परिचालित होकर अपने किसी सुख वा आराम वा लाभ में किसी और की किसी अनुचित हानि वा उस के दुख को अनुभव नहीं करता और किसी और को अनुचित दुख वा हानि पहुंचाकर भी अपनी एक वा दूसरी प्रकार की तृप्ति ढूंढता रहता है, तब तक वह केवल "मैं" अर्थात अहं का ही दास रहता है। इसी अहं की ही महा भयानक दासत्व से नाना प्रकार के पापों और अपराधों और अन्याय और अत्याचारों की उत्पति होती है। यह अहं का दास और पर के सम्बन्ध में पूर्ण अबोधी चाहे किसी धर्म मत को मानता हो, चाहे किसी देवता वा देवी वा ईश्वर का इकरार करता हो, चाहे किसी पुस्तक को धर्म पुस्तक अथवा ईश्वर की पुस्तक कहता हो, चाहे किसी चीज का पाठ और पूजन करता हो, चाहे किसी प्रकार का तप व जप करता हो, वह अवश्य पापाचारी और अपनी दुर्गति से अज्ञानी और विषय लिप्त अथवा मोह में लिप्त और निम्न श्रेणी का जीव अथवा नीच जीवनधारी आत्मा है।.....

क्या यह सच नहीं कि जब तक उच्च जीवन के लिए किसी मनुष्य के भीतर कोई आकांक्षा ही वर्तमान न हो, तब तक वह उसे कदापि लाभ नहीं कर सकता। हां जिस वस्तु के लिए किसी मनुष्य के भीतर कोई आकांक्षा न हो, वह उसे लाभ करना नहीं चाहता और लाभ भी नहीं करता। अब यदि यह सच हो, कि हमारे चारों ओर के मनुष्यों में क्या पुरूष और क्या स्त्री के विचार से लाखों की संख्या में ऐसे ही जन वर्तमान हैं, कि जो शरीर की अल्पाधिक आवश्यक रक्षा और कुछ नीच सुखों और वासनाओं की तृप्ति करने के भिन्न और कोई उच्च आकांक्षा नहीं रखते।.

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 4
अप्रैल – 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य जीवन के चार बड़े – बड़े पड़ाव

ऐसे मनुष्य जो आत्मिक विकास लाभ करने के पूर्णत: अनअधिकारी हैं :-

नेचर में उसकी शक्तियों के लगातार कार्य से उसका हरेक अस्तित्व प्रति क्षण परिवर्तित होता रहता है और परिवर्तित होकर या तो वह विकास लाभ करता है या विनाश। मनुष्य जगत में यही विकास और विनाश के अटल नियम प्रतिक्षण काम कर रहे हैं। यदि हम मनुष्य की ठीक अवस्था को देख सकें तो हमें पता लगेगा कि इस समय ऐसे मनुष्य बहुत भरे पड़े हैं कि जो नेचर के विनाशकारी सिलसिले में चलते चलते ऐसी दयनीय अवस्था में पहुंच चुके हैं कि अब उनके लिये अपने आत्मा के जीवन का विकास साधन करना असंभव या प्राय: असंभव हो गया है। वह अब ऐसी महानीच शक्तियों के पंजे में बुरी तरह आए हुए हैं कि जो उन्हें दिनों दिन अंधा, पागल, बदसूरत, अधिक से अधिक रोगी और महा हानिकारक दुखों में अधिक से अधिक ग्रस्त होने और धीरे – धीरे निर्बल करके अंतत: उनका पूर्णत: अंत कर देने के सिवा उनके लिये और कोई नतीजा पैदा नहीं कर सकती। इस प्रकार के बहुत अभागे या अनअधिकारी मनुष्यों में केवल वह ही मनुष्य शामिल नहीं जो शरीर के विचार में कमजोर, बुद्धि के विचार से मूर्ख, धन के विचार से गरीब और पद के विचार से घटिया आदमी हैं, बल्कि उनमें कितने बड़े – बड़े विद्वान, धनवान, बलवान, राजे महाराजे और उनके अतिरिक्त धर्म के नाम से बड़े बड़े पद रखने वाले मनुष्य भी शामिल हैं। अब प्रश्न यह है कि ऐसे महा अभागे जनों के जीवनों के साधारण लक्षण क्या होते हैं? उसकी सच्ची वास्तविकता आत्मिक जगत के सूर्य, सत्यधर्म के पूर्णांग अवतार इस प्रकार फरमाते हैं – "जो मनुष्य अहं – अनुराग के बहुत अधिक दास होते हैं अर्थात: जो विशेषकर घमंडी, घृणाकारी स्वेच्छाचारी और स्वार्थी होते हैं, वह नेचर की अधोगति के सिलसिले में चलते – चलते इस अवस्था में पहुंच जाते हैं कि फिर वह किसी तरह भी विकास का रास्ता ग्रहण नहीं कर सकते। ऐसे मनुष्यों की सबसे बड़ी मुसीबत यह होती है कि वह अपनी अत्यंत तर्सनाक अवस्था को ठीक रूप से किसी प्रकार देख नहीं सकते और इससे भी बढ़कर उनकी बदनसीबी यह होती है कि वह अपनी अवस्था को सच्चाई के पूर्णत: विरूद्ध कुछ का कुछ देखते हैं, मानों वह पूरे दर्जे के पागल मनुष्य होते हैं। फिर इससे भी अधिक उनकी बदनसीबी यह होती है कि वह सच्चे धर्म अवतार भगवान देवात्मा से साक्षात या उनके किसी योग्य शिष्य के द्वारा आत्म रूप प्रकाशक देव ज्याति और आत्म रक्षक और विकासक देव तेज का दान प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसे जन न तो अपने कल्याण की आप कोई सामर्थ्य रखते हैं न

ही अपने किसी सच्चे हितकारी से कोई सच्ची सहायता पाने के योग्य होते हैं। ओह! ऐसे जनों की यह अवस्था कैसी महा दुखदाई !!"

ऐसे कृपापात्र मनुष्यों के बारे में भगवान देवात्मा "सिद्धांत दर्पण" नामी पुस्तक में इस प्रकार फरमाते हैं-

"जिन मनुष्य आत्माओं में उनका महा पतनकारी अहंअनुराग इतना अधिक हो कि जिसके कारण वह अपनी प्रशंसा के अतिरिक्त चाहे वह कैसी ही झूठी हो किसी और की सच्ची प्रशंसा को सुनकर कष्ट बोध करते हों और जो आप अपने किसी मिथ्या विश्वास या अपनी किसी बुराई या अपने किसी पाप या अपराध या अपनी किसी हीनता के इतने पक्षपाती बन चुके हों कि उसके विरूद्ध किसी से कुछ जानने या सुनने के लिए तैयार न हों और उन बातों में से किसी के विरूद्ध कुछ सुनने पर उसके प्रति इतने घृणा भाव से भर जाते हों कि उसके कारण वह उसे अपने शत्रु रूप में देखते हों और अपने विषय में घटिया दिखाने वाली उसकी किसी सच्ची बात को भी मिथ्या बताते हों और उसमें जो कोई सच्चा गुण भी हो, उसे अपने इस घृणा भाव के कारण न देखते और न स्वीकार करते हों।

"जो अपनी इस अधम प्रकृति के कारण एक या दूसरे मनुष्य में उसके किसी इस या उस सच्चे या मिथ्या दोष या अपराध या पाप या उसकी किसी सच्ची या मिथ्या हीनता के देखने और उसके विषय में किसी से कुछ सुनने के तो सदा लालसी रहते हों और उसे देखकर या सुनकर या उसका वर्णन करके अपने नीच घमंड की तृप्ति पाकर सुखी या प्रफुल्लित होते हों, मगर उन्हें अपनी कोई भी सच्ची नीचता या हीनता कभी दिखाई न देती हो और वह अपने किसी शुभ आकांक्षी की ओर से अपने या किसी ऐसे जन के सम्बन्ध में कि जिसके साथ वह किसी नीच अनुराग से बंधे हुए हों, किसी सच्चे नीच या बुरे कर्म या दोष या अपराध या किसी हीनता के विषय में किसी बात को आप सुनकर या किसी और के द्वारा जानकर या पढ़कर उससे इतना आघात और कष्ट पाते हों कि उसे अपने घृणा भाव को भड़क उठने पर उलटे रूप में देखते हों।

"जो अपने आत्मा के अस्तित्व, उसके विविध प्रकार के पतनकारी अनुरागों, उसकी विविध प्रकार की पतनकारी घृणाओं और उनके द्वारा अपने प्रतिदिन के आत्मिक पतन, इस पतन से मोक्ष की आवश्यकता और उसकी विधि और उसमें उच्च जीवन के उत्पन्न होने की आवश्यकता और उसकी विधि विषयक सत्य बोधों से पूर्णत: शून्य होकर भी अपने ही विविध प्रकार के मिथ्या विश्वासों पर आरूढ़ रहने में अपना बड़प्पन या बढ़ियापन अनुभव करते हों और वह इन सब विषयों के सम्बन्धों में किसी सच्चे शिक्षक या गुरू से ज्योति पाने के निमित्त अपने भीतर कोई आवश्यकता या आकांक्षा अनुभव न करते हों और अपने आपको ही अपना गुरू और शिक्षक मानते हों और इसके साथ ही वह अपनी ऐसी महा शोचनीय दशा को महा शोचनीय रूप से देखने के स्थान में बहुत सुन्दर रूप में देखते हों, और इससे भी बढ़कर देवात्मा को अपने से घटिया और उनके प्रति अपने भीतर स्वभावत: घृणा बोध करते हों।

"जो अपने पतनकारी नीच अनुरागों और अपनी पतनकारी नीच घृणाओं से विविध प्रकार के सुखों को पाकर और उन्हें अपना सुखदाता जानकर उनकी तृप्ति के साधन में ही अपना सच्चा लाभ जानते हों और अनुभव करते हों, वह देवात्मा के देव प्रभावों के पाने के अधिकारी नहीं। इसीलिए ऐसे पूर्णत: अनअधिकारी आत्माओं में न तो देवात्मा के देव प्रभाव प्रवेश कर सकते हैं और न उनमें से कोई किसी प्रकार का शुभ परिवर्तन ही उत्पन्न कर सकते हैं। ओह! इस प्रकार के मनुष्य कैसे अभागे होते हैं!!"

यदि हमारे लिये संभव हो तो हम भगवान

देवात्मा के प्रभावों को पाकर देखें कि क्या हम जीवन के मोक्ष और विकास के मार्ग पर चलने के विचार से दिनों-दिन अधिक से अधिक अन-अधिकारी तो नहीं बनते जाते हैं? अर्थात :-

1. हमारे भीतर घमंड का महानीच भाव दिनों दिन बढ़ते जाकर हमें अपनी आत्मिक असल अवस्था को कुछ का कुछ तो नहीं दिखाता रहता, हम झूठ-मूठ अपने आपको अच्छा महसूस तो नहीं करते रहते और इसके विरूद्ध औरों को सच्चाई के विरूद्ध नाना प्रकार से घटिया तो नहीं विश्वास करते रहते? हम अपने विरुद्ध कोई सच्ची बात सुनकर उससे लाभ उठाने की अवस्था में हैं या आग बबूला होकर पहले से भी अधिक नीच बन जाने की अवस्था रखते हैं?

2. हम नीच घृणा भाव के विचार से किस अवस्था में हैं? क्या हम किसी जन की ओर से अपने किसी सुख अनुराग पर उचित या अनुचित चोट खाकर उससे फट तो नहीं जाते हैं और उसके सम्बन्ध में कोई मिथ्या या पाप मूलक चिंता करने के लिए लाचार तो नहीं होते और यथा अवसर उसका कोई और शुभ साधन तो करना एक ओर उसके लिये केवल शुभकामना तक करने की भी योग्यता से वंचित तो नहीं हो रहे है? यदि हमारी ऐसी अवस्था है तो निश्चय हम भी विशुद्ध परोपकारी नहीं बन सकते और बिना परोपकारी बनने के अपने जीवन के विकास का ठीक रास्ता नहीं खोल सकते। हम सेवा का कोई स्वांग भर कर विशुद्ध परोपकार की दुनिया में अपना कदम नहीं बढ़ा सकते बल्कि अपनी सेवा में विकार युक्त होने के कारण दिनों-दिन अपने आपको इतना महारद्दी अस्तित्व बनाते जाएंगे कि फिर कभी भी हमारे भीतर से विशुद्ध परोपकार की दुनिया विकास न पा सके। ऐसे जन ही बहुत लम्बे काल तक सेवा का स्वांग भरते रहकर किसी तरह विशुद्ध परोपकार अनुरागी नहीं बनते बल्कि उनके भीतर के घमंड और घृणा के नीच अनुराग अवश्य बढ़ते रहते हैं और फिर वह अपनी ऐसी हालात को असल रूप में नहीं बल्कि उल्टे रूप में ही देखते हैं।

3. हम देखें कि स्वार्थ के महा रोग के विचार से हम किस अवस्था में हैं?

हमारे जीवनों का मुख्य लक्ष्य क्या बना हुआ है? क्या अपना आत्मिक कल्याण करना हमारा मुख्य लक्ष्य है और देवात्मा का सम्बन्ध हमारा मुख्य सम्बन्ध है? और उनके कार्य में काम आने की हमारे भीतर कोई सच्ची लगन वर्तमान है? यदि ऐसा नहीं तो हम निश्चय एक या दूसरी नीच सुख लालसा को ही अपने जीवन पर मुख्य अधिकार दिये हुए हैं। ऐसा अधिकार चाहे किसी प्रकार के सम्बन्धी का हो, चाहे धन दौलत का हो, चाहे शारीरिक किसी सुख का हो, जब तक कोई विशुद्ध परोपकार अनुराग हमारे भीतर पैदा नहीं होता या देवात्मा के अनुरागी शिष्य के लक्षण हमारे जीवन में प्रगट नहीं होते तब तक हमारे जीवन में स्वार्थ की कैद में रहना आवश्यक है।

4. हम देखें के हम सच्चे अर्थों में आज्ञाकारी हैं या स्वेच्छाचारी? हम अपने जीवन की विविध गतियां किसकी इच्छा के अनुसार करते या करने का संग्राम करते हैं? भगवान देवात्मा की शुभ इच्छा के अनुसार या अपनी नीच "मैं" के अनुसार? यदि हम भगवान की शुभ इच्छा के अनुसार चलेंगे तो एक ओर हमारा जीवन दिनों दिन अधिक से अधिक सुन्दर और उन्नत होता जाएगा और हमारे जीवनों के द्वारा नाना अधिकारी जनों के जीवन में आत्मिक मोक्ष और विकास का क्रम भी अच्छी तरह चलता हुआ दिखाई देगा।

ऐसा हो कि हम लोग किसी तरह अपनी प्रकृत आत्मिक अवस्था को देख सकें और आत्मिक कल्याण के विचार से अनअधिकारी अवस्था ग्रहण

करने से बहुत अधिक डर बोध करें और जहां तक संभव हो इस राह पर चलना सहन न करें। क्योंकि मनुष्य के लिये आत्मिक विनाश से बढ़कर और कोई बात भयानक नहीं। आत्मिक विनाश होने से उसका शरीर, उसका धन और उसका सम्बन्ध आदि उसके लिए कुछ भी लाभकारी नहीं रहते। लाखों वर्षों के विकास क्रम में उसे जो दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है, वह पूर्णत: अकार्थ जाता है। इसीलिए यदि संभव हो तो किसी मनुष्य को कभी भी ऐसा नारकी मार्ग ग्रहण न करना चाहिए बल्कि अपने जीवन का विकास करने के अधिक से अधिक योग्य बनकर विकास पथ की बेहद उच्च बरकतों को प्राप्त करने वाला बनना चाहिए।" (सत्येदव संवाद, 9 अप्रैल 1940)

किडनी को ऐसे रख सकते हैं स्वस्थ

भारत में 10 फीसदी लोग ऐसे है जो किडनी की गंभीर बीमारी से ग्रसित है। यह बीमारी भी स्ट्रोक और डायबिटीज की तरह ही एक आम बीमारी के रूप में लगातार बढ़ रही है, लेकिन अंतर यह है कि स्ट्रोक और डायबिटीज का खर्च लोग फिर भी उठाने में समर्थ होते हैं, लेकिन किडनी फेलियर होने या अन्य किडनी संबंधी बीमारी का इलाज कराना ज्यादा मंहगा पड़ता है। देश में किडनी की बीमारी से ग्रसित कुल जनसंख्या में लगभग 60 फीसदी पहले से ही डायबिटीज से ग्रसित है। हालांकि इस बीमारी के लक्षणों को समय रहते पहचानकर इससे बचाव किया जा सकता है।

गलत दवाइयां खाना सबसे ज्यादा नुकसानदायक..... अक्सर लोग मेडिकल स्टोर से सिर दर्द, पेट दर्द या बदन दर्द की गोलियां बिना डॉक्टर की सलाह के लेते हैं, जो किडनी का सबसे ज्यादा नुकसान करता है। पेन किलर टेबलेट्स के सेवन से बचना चाहिए, साथ ही एक बार डॉक्टर से लिखवाई किसी टेबलेट को दोबारा वही तकलीफ होने पर बिना डॉक्टरी सलाह के भी नहीं लेना चाहिए। बिना पूरी जानकारी के किसी भी तरह का आयुर्वेदिक काढ़े का बार-बार सेवन करने से भी बचना चाहिए।

शुगर कंट्रोल से बच सकते है..... कुछ मामलों में डायबिटीज होने के 2 या 3 साल बाद ही किसी व्यक्ति की किडनी फेल हो जाती है और मरीज की डायलिसिस या ट्रांसप्लांट की आवश्यकता होती है। ऐसी उस स्थिति में होता है जब व्यक्ति डायबिटीज के बारे में देरी से जानता है, इस बीमारी के होने के सात साल बाद उपचार न करने पर ही किडनी पर शुगर का असर होता है।

कोलेस्ट्रॉल कनेक्शन..... कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से धमनियों को नुकसान पहुंचने से किडनी पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है, संतुलित आहार, व्यायाम से इसे नियंत्रित रखना चाहिए।

ब्लड प्रेशर कनेक्शन..... ताजा अध्ययन के अनुसार किडनी फेल होने का मुख्य कारण हाई बल्ड प्रेशर है और किडनी फेल होने के 27 फीसदी नए मामलों के लिए भी जिम्मेदार है। इसे नियंत्रण में रखिए।

ये पांच महत्वपूर्ण बातें

1. कुछ लोग कई बार किसी काम की वजह से यूरिन को भी कंट्रोल करते है, जिसका दुष्प्रभाव किडनी पर पड़ता है। इसलिए यूरिन आने पर उसे कंट्रोल नहीं करना चाहिए।

शेष पृष्ठ 16

मनुष्यात्मा की नीच और उच्च गतियां और उनके जुदा जुदा फल (अमृत वर्षा)

नेचर का परिवर्तन विषयक अटल कार्य। नेचर में जड़ और शक्ति दोनों ही वस्तुएं प्रत्येक जीवित और अजीवित अस्तित्व में पाई जाती हैं। नेचर का यह नियम है कि जहां कहीं शक्ति है, वहां ही उसका कार्य भी वर्तमान है। अथवा जहां कहीं कार्य हो रहा है, वहां अवश्य उस कार्य के करने वाली शक्ति भी मौजूद है। बिना शक्ति के कहीं कोई कार्य नहीं होता और नहीं हो सकता। इसलिए नेचर में क्या अजीवित और क्या जीवित प्रत्येक अस्तित्व में प्रति क्षण कार्य हो रहा है। और वह कार्य उन्हें हर घड़ी और हर पल बदल रहा है। बदलने से उनमें दो ही प्रकार के फल उत्पन्न हो रहे हैं, श्रेष्ठ वा अश्रेष्ठ, उच्च व नीच, भले वा बुरे, हितकर व हानिकारक, विकासकारी या पतनकारी। इस विषय में भगवान देवात्मा पूजनीय देव शास्त्र खण्ड - I में इस प्रकार लिखते हैं :-

"नेचर परिवर्तनशील है अर्थात् वह अपने सारे रूप में प्रति क्षण बदलती रहती है। नेचर के परिवर्तनशील होने से उसका प्रत्येक छोटा और बड़ा अजीवित और जीवित जगत और उसके ऐसे प्रत्येक जगत का प्रत्येक अजीवित और जीवित अस्तित्व परिवर्तित होता है। नेचर में रात दिन यह परिवर्तन कौन उत्पन्न करता है? उसकी अपनी शक्तियां। नेचर के जिस किसी विभाग में उसकी जो जो शक्तियां गति की दशा में होती हैं वह अपनी गति से जैसे अपने रूप में आप बदलती रहती हैं, वैसे ही वह अपनी गति से जिस जिस जड़ वस्तु को जहां जहां तक धक्का लगाने व उन्हें जोड़ने और तोड़ने आदि की योग्यता रखती हैं, वहां तक उन्हें भी बदल देती हैं।

नेचर की इन शक्तियों के कार्य से उसके किसी अंश में उन्नति दायक वा विकासकारी और किसी अंश में पतन वा ध्वंसकारी परिवर्तन होता है। विकासकारी परिवर्तन से उसके कुछ अंश पहले की अपेक्षा श्रेष्ठ बनते वा उन्नति लाभ करते हैं और पतनकारी परिवर्तन से उस के कुछ अंश बिगड़ते वा पतित होते हैं। और कितने ही अंश पतित होते होते अपने व्यक्तिगत अस्तित्व को खोकर उसी में ही लय वा लोप हो जाते है।"

मनुष्यात्माओं में नीच और उच्च गतियां:-

नेचर के परिवर्तन विषयक अटल नियम के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के अस्तित्व में भी उसकी अपनी नाना शक्तियों और उसके आवृतकारी नाना प्रकार के सामानों और सम्बन्धियों के प्रभावों के द्वारा मनुष्य प्रति क्षण परिवर्तन होता रहता है। नीच शक्तियों और नीच प्रभावों के द्वारा मनुष्यों में अपेक्षाकृत नीच परिवर्तन और उच्च शक्तियों और उच्च प्रभावों के द्वारा मनुष्यों में अपेक्षाकृत उच्च परिवर्तन होता रहता है। यह नीच और उच्च परिवर्तन उनकी नीच और उच्च गतियों के द्वारा ही होता है। चारों ओर लाखों और करोड़ों नर और नारी अपने तन सुख और अहं सुख या धन सम्पति और सन्तान सुख आदि भावों से परिचालित होकर दिन रात जहां चोरी, ठगी, बटमारी, रिश्वत, डाकाजनी, व्यभिचार, नशों का सेवन, मांसाहार, विश्वासघातकता, कृतघ्नता आदि कर्मों का बाजार गर्म करने में लगे हुए हैं, और क्या अपने लिए और क्या अपने निकट और दूर के सम्बन्धियों के लिए हानिकारक व अपहरणकारी और दुखदाई प्रमाणित हो रहे हैं, वहां कोई कोई उच्च भावधारी जन, वा मान वा प्रशंसा के अदना भावों के रखने वाला जन उनसे परिचालित

होकर एक या दूसरे अंग में औरों के कोई दुख वा अभाव निवारण करने की गतियां करके सुखकर वा हितकर भी प्रमाणित होते देखे जाते हैं। मनुष्यात्माओं में नीच और उच्च गतियों के कुछ दृष्टान्त भगवान देवात्मा ने एक जगह पर इस प्रकार वर्णन किए हैं :-

"राम पहले भंग नहीं पीता था, अब पीता हैं। भंग पीना राम की नीच गति है। गुलाब कौर पहले व्यभिचारिणी न थी, अब बन गई है। यह उसकी नीच गति है। सुख लाल किसी के गुण वा उसकी प्रशंसा को सुनकर ईर्ष्या से कुढ़ने लगता है। यह उसकी नीच गति है। शिव दत्त अपने हितकर्ता से अपने किसी दोष वा अपराध को सुनकर जल उठता है और उसके प्रति दुश्चिन्ता करता है, यह उसकी नीच गति है। हरदयाल औरों की चीजें चुरा लेता है, यह उसकी नीच गति है। करमदीन थानेदार रिश्वत लेकर मुजरिम को छोड़ देता है, यह उसकी नीच गति है। राम बन्दूक लिए चिड़ियों को मारता फिरता है। यह उसकी नीच गति है। मोहन किसी के ठगने की तरकीबें सोच रहा है, यह उसकी नीच गति है। इत्यादि इत्यादि। हरदित दया भाव से परिचालित होकर हर रोज रोगियों को मुफ्त औषधि देता है, यह उसकी उच्च गति है। राम धन अभाव निवारण विषयक भाव से परिचालित होकर कई यतीम लड़कों की पालना करता है, यह उसकी उच्च गति है। परमेश्वरी इसी भाव से कई लड़कियों को शिल्प का काम सिखाती है, यह उसकी उच्च गति है। महीपत इसी भाव से लोगों को नशे और व्याभिचार आदि से बचाने के लिए उपदेशक का काम करता है, यह उसकी उच्च गति है। हर किशन इसी भाव से लागों को मिथ्या विश्वासों से और कुसंस्कारों से निकालने के लिए व्याख्यान देता है, और पुस्तकें लिखकर छापता है, यह उसकी उच्च गति है। प्रेमचन्द कृतज्ञ भाव से परिचालित होकर अपने किसी हितकारी की तन वा मन वा धन से सेवा करता है, यह उसकी उच्च गति है। देव दत्त स्नेह भाव से परिचालित होकर किसी पौधे की पालना करता है, यह उसकी उच्च गति है। प्रेम देवी किसी कामको सुखकर न पाकर भी केवल कर्तव्य भाव से परिचालित होकर उसे पूरा करती है, यह उसकी उच्च गति है। इत्यादि इत्यादि।"

नीच और उच्च गतियों का ज्ञान और बोध

यद्यपि इस दुनियां में दोनों प्रकार के मनुष्य पाए जाते हैं। एक ओर जहां बहुत बड़ी संख्या में नीच गति परायण स्त्री पुरुषों की भरमार है, वहां दूसरी ओर कुछ संख्या ऐसे जनों की भी प्रत्येक जाति और प्रत्येक देश में व प्रत्येक मजहब में मिलती है, जो एक वा दूसरे दुख वा अभाव निवारण विषयक उच्च भाव की गति करके और उनमें अपनी तन मन और धन सम्बन्धी शक्तियों को खर्च करने में तृप्ति पाते अथवा सुख लाभ करते हैं। तथापि आत्मिक जगत के देव सूर्य भगवान देवात्मा से पहले किसी भी मनुष्य व किसी देवता व देवी व उसके किसी अवतार, नबी व पैगम्बर व गुरू व पीर व हादी आदि ने मनुष्यात्मा के रूप और उसके जीवन को नीच और उच्च बनाने वाली नीच और उच्च शक्तियों, उनके कारणों और उनके फलों, धर्म और अधर्म और मनुष्य के लक्ष्य आदि नाना विषयों में नेचर की सत्य घटनाओं और उसके अटल नियमों पर स्थापित कोई सत्य ज्ञान न आप लाभ किया और न ही इनमें से किसी ने ऐसी सत्य और विज्ञानमूलक धर्म शिक्षा दुनिया को दी और उसका प्रचार किया। क्योंकि वह देव शक्तियों से विहीन थे, इसलिए देव ज्योति से खाली होने के कारण ऐसी शिक्षा को जब खुद देख ही नहीं सकते थे तब उसका औरों में तो कहां प्रचार कर सकते थे। वह पूर्णत: घोर आत्म अन्धकार में ग्रस्त थे व अभी ग्रस्त हैं। नेचर ने अपने विकास क्रम में यह सर्व श्रेष्ठ अधिकार एक मात्र देवात्मा के लिए ही रखा था। और उन्होंने ही देव शक्तियों में उन्नत होकर अपनी विलक्षण देव ज्योति में आत्मा और सत्य धर्म के विषय

में अति गूढ़, अमूल्य और परम कल्याणकारी सत्यों और तत्वों को देखा और प्रकट किया है और एक मात्र उन्होंने ही मनुष्य मात्र के उद्धार और सर्वोच्च कल्याण के लिए अधिकारी आत्माओं को ज्ञानी और बोधी बनाने का बीड़ा उठाया है। मनुष्यों की उपरोक्त नीच और उच्च गतियों और उनके जुदा जुदा फलों के विषय में ज्ञानी और बोधी बनाने के निमित भगवान देवात्मा ने इस प्रकार की शिक्षा प्रदान की है :-

आत्मा का पतन व जवाल

"जब कोई आत्मा"

1. विविध प्रकार के सुखों के लिए (केवल उन सुखों की खातिर) नीच अनुराग से परिचालित होता है, या
2. उनमें से किसी सुख या सुख के देने वाले सामान के लाभ में जिस किसी जीवित या अजीवित अस्तित्व की तरफ से रुकावट पैदा हो या विरोधिता की जाये, उसके लिए नीच घृणा या असद भाव पोषण करता है, तब वह,

(1) अपने और दूसरों के सम्बन्ध में विविध प्रकार की मिथ्या या झूठ की गतिया ग्रहण करने और

(2) अपने और दूसरों के सम्बन्ध में विविध प्रकार की हानियां करने के लिए मजबूर हो जाता है और उससे वह पतन व ज़वाल की तरफ जाता है।

आत्मिक पतन के भयानक फल

नीच गति या पतन मार्ग पर चलकर किसी भी मनुष्यात्मा के लिए नेचर के अटल नियमानुसार उस गति के निम्नलिखित फलों को भोगना जरूरी है :-

(1) वह अपने भीतर और अपने इर्द गिर्द अधिक से अधिक आत्म अन्धकार पैदा करता जाता है।

(2) वह अपने विविध पतनकारी भावों और उनकी तृप्ति के साधनों का दास बनता जाता है।

(3) वह अपनी पतनकारी गतियों की दासत्व से मोक्ष या मुक्ति लाभ करने और अपने भीतर उच्च ज्योति और उच्च भावों के उत्पन्न और उन्नत करने की अपनी जन्मजात योग्यता को खोता जाता है।

(4) वह अपनी निर्माणकारी या बनाने वाली शक्ति को खोता जाता है। और यदि उसके खोने का क्रम जारी रहे, और वह सारी की सारी खो दे तब वह अपने लिए जीवित शरीर बनाने के अयोग्य होने के कारण (कि जिस शरीर का होना उसके जीवन रहने और अपने खयालात और भावों का प्रकाश करने के लिए अवश्यम्भावी है) वह आप भी नष्ट हो जाता है। (दुख और कष्ट पाते पाते)

आत्मा की सत्य मोक्ष और उसके विकास की सत्य विधि :-

मनुष्यात्मा की उसके पतनकारी भावों और उनसे उत्पन्न होने वाली चिन्ताओं और क्रियाओं से सत्य मोक्ष और उसमें निर्माणकारी या उच्च शक्तियों के विकास के लिए नेचर के नियमों के अनुसार एक और सिर्फ एक सच्ची विधि यह है कि -

(1) उसे ऐसी रूहानी रोशनी (देव ज्योति) मिले कि जो उसे उसके आत्मा की गठन, उसके रोगों और उसके हानिकारक फलों, उन रोगों से मुक्ति व शफा और उच्च भावों के विकास की विधि के विषय में सच्ची हकीकत दिखा सके।

(2) उसे दिलों को बदलने वाला ऐसा रूहानी तेज (देव तेज) मिले, कि जो उसके भीतर के पतनकारी भावों के प्रति नीच अनुराग के स्थान में उच्च घृणा और उच्च दुख उत्पन्न कर सके, और उसमें वह उच्च भाव उत्पन्न

और विकसित कर सके, कि जो उसके भीतर नहीं है और जिनकी उसके आत्मा की निर्माणकारी शक्ति को बढ़ाने के लिए जरूरत है।

<u>आत्मा में उच्च विकास के फल :-</u>

जहां तक कोई आत्मा -

(1) अपने नीच अनुरागों और नीच घृणाओं और उनसे उत्पन्न विविध पतनकारी विश्वासों और नीच कर्मों से मोक्ष लाभ करने के योग्य होता है, और

(2) निर्माणकारी या उच्च भावों को विकसित करने के योग्य होता है,

वहां तक वह

(क) अपने अस्तित्व को गठन के विचार से श्रेष्ठ बना लेता है।

(ख) अपनी जीवनी शक्ति की आयु को बढ़ाने के योग्य हो जाता है।

(ग) नेचर के दूसरे भागों के साथ अपने सम्बन्ध में अपेक्षाकृत उच्च मेल लाने के योग्य हो जाता है।

(घ) अपने भीतर श्रेष्ठ कोटी के सूक्ष्म जीवित परमाणु या सेल बनाने के योग्य हो जाता है, और इस स्थूल शरीर की मृत्यु के बाद उनसे श्रेष्ठ कोटी का सूक्ष्य या लतीफ शरीर निर्माण करने के योग्य होता है, और अपनी आत्मिक अवस्था के अनुसार सूक्ष्म जगत के उच्च लोकों में प्रवेश करने और रहने और वहां की उच्च बरकतों को सम्भोग करने का अधिकारी बनता है।

मुबारक हैं वह जन, जो देवात्मा परम गुरू के दरबार में आते हैं, और उनके देव प्रभावों को पाकर न केवल अपनी नीच और उच्च गतियों और उनके फलों का ज्ञान और बोध लाभ करते हैं, किन्तु अपनी नीच या पतनकारी गतियों और उनके विकारों से सत्य मोक्ष और उच्च व धर्म भावों में विकास लाभ करते हैं और इस श्रेष्ठ अधिकार और सौभाग्य को पाकर अपना और औरों का अधिक से अधिक शुभ साधन करते हैं। और अपने जीवन से अपने गुरू के नाम और काम को रोशन करने का हेतु बनते हैं।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

क्या हम अन्धे पैरोकार तो नहीं?

हमारे देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि हम लोग आंखों में पट्टी बांधकर और सिर पर लोहे की टोपी चढ़ाकर चलते हैं, वह कैसे? हम जब किसी को नेता बनाकर चलते हैं, तो उसके गुण दोषों का विश्लेषण करना भूल जाते हैं। कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं जिसमें गुणों के साथ अवगुण न हों। जब तक कोई भी मनुष्य घर तक सीमित रहता है अर्थात् अपने परिवार और मित्रगणों तक ही दायरा है तो हम उसके अवगुणों की तरफ ध्यान न भी दें तो काम चल सकता है, परन्तु जब कोई भी जन अपने सीमित दायरे से निकलकर बड़े दायरे में प्रवेश करता है, अर्थात् वह कोई राजनैतिक नेता, धार्मिक नेता या किसी संस्था का उच्च पद - धारी बन जाता है, तो उसके गुण जहां उसे आगे ले जाते है, उसकी कमज़ोरियाँ organisation को डुबा देती हैं। इसलिए ऐसी कमेटियां आदि बनाई जाती हैं जो उस पर अंकुश रखें, परन्तु हमारी त्रासदी यह है कि हम भारतीय अधिकतर अन्धे भक्त हो जाते हैं और अन्धाधुन्ध अपना हर प्रकार का सहयोग उसको देते है। यह कोई बुरी बात नहीं, परन्तु जब किसी नेता की (चाहे वह राजनैतिक नेता हो या धार्मिक या कोई और उच्च पद धारी) कमज़ारियों और किसी पहलू में अयोग्यताओं को हम नज़र अन्दाज़ करके चलते है, या बिना सोचे समझे उसकी हर बात में हां में हां मिलाने लग जाते है, अपनी बुद्धि शक्ति, अपनी सोच विचार का प्रयोग ही नहीं करते तो इसकी महा हानियों को भुगतना अवश्यम्भावी है।

हमारे देश में ऐसे अनेकों उदाहरण मिल जाऐंगे, जब हम किसी को नेता मानकर अन्धाधुन्ध उसके अनुयायी बन जाते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि हम केवल आलोचनात्मक रवैया अपना लें। इस बात का सामंजस्य रखना कि जो बातें ठीक है, देश, समाज या संस्था के हित में हैं, उन पर विचार करने के लिए मंच खुला रहे और ठीक साबित होने पर उसका डटकर साथ दिया जाए। परन्तु एक आदमी में सब खूबियां नहीं हो सकतीं, इसलिए उसकी कमज़ारियों को भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जाना चाहिए। उसकी गल्त नीतियों या गल्त फैसलों का विरोध करना ही जन हित में होता है। बेशक यह बड़ा कठिन मार्ग है परन्तु मार्ग असल यही है। हम मनुष्यात्मा इतने कमज़ोर हैं कि हम जिसके पक्षधर बन जाते हैं, उसकी हर ग़ल्ती को न केवल नज़रअन्दाज करते है बल्कि उसके हिमायती भी बन जाते हैं। हम में यह साहस नहीं होता कि ग़ल्त को ग़ल्त और ठीक को ठीक कह सकें। इसी के परिणाम देश, समाज और संस्थाओं को भुगतने पड़ते हैं।

दूसरी ओर प्रत्येक नेता वा हैड का भी यह नज़रिया हो कि वह अपने फैसले या नीति के विरुद्ध बताने वाले को अपना दुश्मन वा विरोधी न समझे, उल्टा आलोचनाओं को निमन्त्रित करे ताकि उसकी नीतियों और फैसलों में जो कमी हो, वह दूर हो सके। मेरा अपना तजुरबा है कि हम किसी बात के लिए दस विरोधी ख़्यालों वाले भी बैठ जाएं हम सकारात्मक वाद विवाद के बाद अवश्य ही एक फैसले पर पहुंच जाते हैं, और वह फैसला बेहतरीन फैसला होता है। अपने झूठे अहंकार को अवश्य छोड़ना पड़ता है। दस आदमियों के तज़रबे से किसी एक आदमी का तजुरबा कैसे बेहतर हो सकता है।

हमारे देश की जनता में सोच विचार की बहुत बड़ी कमी है। दूसरा स्वार्थ बहुत गहरा है। आज एक मनुष्य को सिर पर बैठा लेंगे और उसकी बड़ी से बड़ी ग़ल्ती को नज़रअन्दाज कर देंगे, यदि उसकी कुर्सी छिन जाए तो उसकी परछाई से भी भागने लगेंगे। बहुत थोड़े ऐसे जन होते है कि जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सत्ता छिन जाने पर भी किसी मनुष्य के सही गुणों की परख़ रखें, या सत्ता में रहने के दिनों में उसकी कमियों को बता सकें या उनके विरूद्ध खड़े हो सकें। हां में हां मिलाना कोई बड़ी खूबी की बात नहीं है। यह बहुत बड़ी कमजोरी है जो संस्थाओं को डूबो देती है। इसी कमज़ोरी का लाभ उठाकर सत्ताधारी अपने हां हजूरियों को भर्ती करके तानाशाह बन जाते हैं। परन्तु अन्त कितना भयानक होता है। ऐसे जन व्यक्तिगत हानि भी उठाते हैं, और जिसके भी वह नेता है, उसकी भी महा हानि करते हैं।

अवगुण चिन्तन करना बहुत बड़ी हानि करता है, परन्तु झूठी चापलूसी करना और दूसरो की अयोग्यताओं की भी झूठी प्रशंसा करने से भी बड़ी हानि होती हैं बड़ों के गुणों के लिए सन्मान बहुत आवश्यक है, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर सन्मान पूर्वक उनकी कमज़ारियों को बताना और उनका साथ न देने का साहस दिखाना भी अति आवश्यक है।

काश! हम यह प्रश्न करते रहें कि हम कहीं ग़ल्त नीतियों या फैसलों की पोषकता तो नहीं कर रहे, इस सोच विचार में पड़े रहने में ही समाज का हित है।

पूजनीय भगवान ने जगह जगह पर इस विषय में अपनी देव वाणी में फरमाया है। माननीय श्रीमान् धर्मबल जी के किसी कागज़ के पेश करने पर पूजनीय भगवान ने फरमाया "क्या कौंसल में यह भी होता है कि जब दिमाग़ साथ न देता हो तो एक के पीछे हां में हां मिला देते हों, या कुछ Opposition (विरोधता) भी होती है? और फिर वाक़यात हासिल किए जाते हैं, और उनकी बिना पर फैसले होते हैं।" आगे फरमाते हैं :-

"मैं का अनुरागी इन्सान एक एक मामले में हक़ीक़त की तह तक नहीं जाना चाहता। उसके सब फैसले अपनी "मैं को लेकर होते हैं। नेचर के सच्चे नियमों और वाकयात की वह परवाह नहीं करता।"

"किसी विषय में हक़ीकत को देखने में आंखे बन्द न करो, वरना तबाह और बरबाद हो जाओगे, कि जैसे अब तक होते रहे हो।"

"किसी गठन प्राप्त सोसाईटी में उसके सब अंगों को हरकत में आने की जरुरत हैं, क्योंकि अगर सब अंग हरकत में न आवे तो नुकसान हो जाता है।"

"जहां घमण्ड हैं, वहा नेचर के किसी विषय के सम्बन्ध में इन्सान तहकीकात करना नहीं चाहता। ऐसा करने में नेचर के अटल नियमानुसार कोई सुख नहीं मिलता, इसलिए वह अपने और औरों के सम्बन्ध में मिथ्या विश्वासों से भरा पड़ा रहता हैं। और अपने आप औरों के सम्बन्ध में असल हक़ीक़त को जानने के लिए रोशनी हासिल करना नहीं चाहता।"

"नेचर का यह नियम है कि जो बात तुम खुद नहीं जानते और जिसको कोई और जन जानता है और तुमको उस बात के जानने की जरूरत है, तो तुम उस जानने वाले जन की रहबरी में चलो। एक एक अन्धा आदमी आंखो वालों की रहबरी में चलता है। वह खुद भी कहता है कि मैं अन्धा हूं मेरी मदद करो- - - - - ज़रूरत इस बात की है कि जो बात तुम नहीं जानते, मानों कि मैं नहीं जानता- - - घमंड से भरकर नुकसान मत उठाओ।"

(सुरजीत बराड़)

पति पत्नी के सम्बन्ध का आधार

एक परिवार का नौजवान लड़का और दूसरे परिवार की नौजवान लड़की जब विवाह बन्धन में बन्ध जाते हैं, तो वह पति पत्नी बन जाते हैं। आजकल की लड़कियां सिनेमा आदि देखकर यही आशा लेकर आती है कि उसका पति उसके लिए कैंडल लाईट डिनर का प्रबन्ध करेगा, उसे प्रतिदिन घुमाएगा और ऐसी कई प्रकार की कल्पनाएं संजोए हुए जब वह ससुराल की कठोर धरती पर पैर रखती हैं, तो वह किसी की नई चाची, ताई, भाभी, देवरानी बन जाती है, सब की आशाएं उस पर लग जाती हैं। परन्तु जैसे एक पौधे को जब दूसरे स्थान पर लगाया जाता है, तो उसे पनपने में समय लगता है, यह कोई नहीं समझता। लड़की के ससुराल वालों के साथ सम्बन्ध का आधार ही ग़ल्त है। जरूरत से अधिक आशाएं रखकर, कड़वाहट पैदा होती है पति के सम्बन्ध का आधार अधिकतर शारीरिक सुख होता है। यह सारे आधार पति पत्नी के सम्बन्ध की नींव ही कच्ची कर देते हैं। घरों में इसके क्या परिणाम होते हैं, यह हम सब को ज्ञात है। अब सोचना यह है कि पति पत्नी के रिश्ते के आधार क्या होने चाहिए, जिससे यह सम्बन्ध मित्रवत, सहयोगी, स्नेह भरपूर और आनन्द - दायक बन सके।

सन्मान भाव :- पति पत्नी जीवन साथी हैं, कहते तो हैं कि जीवन के दो पहिए हैं परन्तु पुरुष, प्रधान समाज में ऐसा देखा नहीं जाता। इन पहियों में सन्मान भाव ग्रीस का काम करता है। श्रद्धेय कनल जी ने लिखा है कि पति पत्नी के सम्बन्ध में प्यार से भी अधिक सन्मान की आवश्यकता है। हमारे देश में पतियों को तो फिर भी जी कहकर बुलाते हैं परन्तु पत्नियों को सन्मान से बुलाने में शर्म महसूस करते हैं। आज के नव - दम्पति तो पति को भी नाम से ही पुकारते हैं। परन्तु मैंने देखा है कि नाम लेते हुए पत्नि को "आप" कहकर सम्बोधन करते हैं। कम से कम "तू" कहकर नहीं बुलाते। परन्तु अपशब्द दोनों तरफ से खूब प्रयोग में लाए जाते हैं।

सन्मान भाव किसी के गुणों को देखकर पैदा होता है। यदि पत्नी यह अनुभव करे कि उसका पति मेहनत करके कमाकर उसे सुख सुविधाएं देता है, इस कोर्स में मताहत होते हुए उसे कई बार बोस से अपमानित भी होना पड़ता है। कोई भी फील्ड हो सब में कठिनाईयां तो होती हैं, यदि यह सोचकर पत्नी पति को सन्मान दे, तो रिश्ते में मिठास बनी रहती है। इसी प्रकार पत्नि, घर सम्भालने, बच्चों को जन्म देने, पालने, सम्बन्धों को निभाने के कार्य जो कुशलता पूर्वक करती है, उसके लिए सराहना के भाव उसके लिए टानिक का काम करते हैं।

कृतज्ञता :- पति पत्नी दोनों ही परिवार चलाने में अपनी भिन्न भिन्न भूमिकाएं निभाते हैं, उनके लिए एक दूसरे का शुक्रगुज़ार होना एक और आवश्यक भाव है। पति यदि कमाता है, तो उसका काम एक है, परन्तु पत्नी का काम तो multipupose है। घर सम्भालना, रिश्ते निभाना, जाब पर भी जाना, अपने से पहले परिवार, पति, बच्चों के सुख आराम को महत्व देना, घर के बिल और दूसरी पेमैंट का ध्यान रखना और कभी न भूलना, घर का प्रबन्धन, कौन सा काम पहले और कौन सा बाद में किया जाना, इसका हुनर भी एक अच्छे प्रबन्धक की तरह पत्नी में साधारणत: अधिक होता है घर को सलीके से रखना, साफ वा सुन्दर रखना, खाना पकाना, सबके कपड़े धोना, सम्भालना,

समय पर सबको प्रत्येक वस्तु उपलब्ध कराना। बच्चों को सजाने संवारने के साथ उनकी पढ़ाई तक की भी जिम्मेदारी निभाना, पिता जहां अनुशासन के नाम पर सख्त रहते हैं, तो मां बच्चों को लाड प्यार करके सन्तुलन बनाए रखती है। इतनी सारी जिम्मेदारियां निभाने के बाद यदि कम से कम पति उसके लिए शुक्रगुज़ार न हो, तो दिल टूटने लगते हैं, निराशा और अवसाद स्त्रियों को घेर लेता है। सबसे पहले जागने और सबसे पीछे सोने वाली पत्नी ही है। यदि पति पत्नी एक दूसरे के उपकारों को अनुभव करते रहें, तो यह सम्बन्ध जिन्दगी का सबसे बड़ा उपहार बन जाता है।

सहानुभूति – एक दूसरे की तकलीफ का ख्याल :– दुख में, किसी बिमारी में, या आर्थिक रूप से किसी तंगी में, पति और पत्नी यदि एक दूसरे को प्यार और हमदर्दी दें, तो सब कष्ट मिलकर दूर हो जाते हैं। इसमें पति अधिकतर लापरवाह होते हैं। पत्नी बिमार होकर भी अपने कर्तव्य निभाती रहती है, बहुत से घरों में पत्नियों को शारीरिक बिमारी है, उसकी परवाह नहीं की जाती या उस पर उचित खर्च करना भी फज़ूल लगता है। मैं एक घर में गई, जहां चारपाई पर एक पत्नी पड़ी रो रही थी, उसको शारीरिक तकलीफ तो थी ही, परन्तु अपने पति को लापरवाह वा मस्त घूमता देखकर मान्सिक वा हार्दिक पीड़ा भी थी, मैंने उन्हें ढाढ़स दिया, परन्तु ढाढ़स तो पति को देना चाहिए था, जो उसे सारी जिन्दगी नहीं मिला, तो यह हृदय की कठोरता रिश्ते में मिठास कहां रहने देती है।

कई पढ़े लिखे पति भी समूह में बैठे हुए अपनी पत्नियों को नीचा दिखाते रहेंगे, वह बिचारी चुपचाप सब्र का घूंट पी लेती हैं, कहेंगे यही कि हम तो हंसी मजाक कर रहे थे। एक दूसरे की भावनाओं को न समझना रिश्तों को खराब करने का कारण बनता है।

एक दूसरे के सलाहकार – साधारणत: पति बाहर की दुनियां का अधिक ज्ञान रखते हैं, उन क्षेत्रों में वह अच्छे सलाहकार हो सकते हैं, परन्तु सम्बन्धों को सम्भालने वा घर को सम्भालने में स्त्री अधिक अच्छी सलाहकार होती है, परन्तु हमारे पुरुष प्रधान समाज में यह समझना बड़ा कठिन है कि पत्नी को महत्व दिया जाए। उसकी सलाह मान लेने से कई ठीक काम हो भी जाएं, तो भी पति का अहं उसे उसका credit नहीं देना चाहता। ब्रिटेन में कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा शोध में बताया गया है, महिलाएं मन को पढ़ने में माहिर होती है। यह भी कहा जाता है स्त्री में छटी इन्द्री होती है, जो दूसरे के चेहरों को पढ़ने में उन्हें माहिर बनाती है। इस प्रकार पति पत्नी एक दूसरे के गुणों के अनुसार, अहं को छोड़कर एक दूसरे के अच्छे सलाहकार बन सकते है। यदि दोनों में से कोई अच्छी सलाह देता है, और उसका अच्छा परिणाम होता है तो उसकी सराहना भी आवश्यक है।

वफादारी :– इसके भिन्न एक दूसरे के प्रति पूर्ण वफादार वा विश्वास के पात्र रहना भी पति पत्नी के रिश्ते को मजबूत करता है। यह सम्बन्ध जीवन भर का है, तो पग 2 पर इसे सम्भालना आवश्यक है। कई बार इस सम्बन्ध में दोनों के माता पिता वा अन्य सम्बन्धियों का अनुचित दख़ल भी सम्बन्ध में खटास पैदा कर देता है। यहां पति पत्नी को बहुत सचेत और समझदारी से काम लेना चाहिए। कई बार सास ससुर पति को उकसाते हैं, उधर पत्नी पति को शिकायत करती है, तो पति बिचारा बीच में पिस जाता है, और इससे उसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो जाता है। पति और पत्नी दोनों को ठीक क्या है और ग़ल्त कौन है समझने और समझदारी से रिश्तों में समन्वय बनाए रखना होता है। कई बार मां बाप की बात ग़ल्त जानकर भी

पति नहीं बोलता परन्तु पत्नी को समझा देता है कि मुझे पता है कि वह ग़ल्त हैं, परन्तु मेरे मां बाप हैं, तुम धैर्य रखो मैं तुम्हारे साथ हूं इससे ही पत्नी गलत व्यवहार भी सहन कर लेती है, ऐसी कई उदाहरणें देखने को मिलती है।

क्षमा करना वा क्षमा मांगना :- यह सबसे कठिन काम है। प्रत्येक मनुष्य से गल्तियां होना, गर्म बोलना, अपशब्द कहना और कई सूरतों में तो पतियों द्वारा हाथ तक उठा देने जैसा घृणित अपराध भी हो जाता है, परन्तु यदि दिल से उसके लिए क्षमा याचना कर ली जाए, तो घर टूटने से बच जाते हैं। मनुष्य जन्म से ही सुख अनुरागी है, जब उसके सुख पर चोट लगती है, तो इतने निकटी सम्बन्ध में भी कड़वाहट भर जाती है। क्षमा मांगना और फिर क्षमा कर देना प्रत्येक सम्बन्ध में आवश्यक है।

पिछले दिनों मुझे एक शिक्षित और सभ्रान्त परिवार से बात करने का अवसर मिला, तो हंसी मजाक में मैंने पूछ लिया कि अब घर में कैसा चलता है, क्योंकि मैं उनकी शादी के बाद के कई वर्षों में उनके लड़ाई झगड़े देखती रही थी, तो उसने कहा कि बहन जी जैसे आप समाज में समझाते हो कि जमा, नफी (Plus-Minus) कर लिया करो, मैं जब गुस्से में होती हूं तो अपने पति के जमा वाले अंकों में से उस दिन वाला ग़ल्त व्यवहार घटा देती हूं, तब उन्होंने जो कुछ मुझे जिन्दगी में दिया है, वह पलड़ा हमेशा भारी रहता है, तो मैं शान्त हो जाती हूं। मुझे इस बात से बहुत खुशी हुई। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की और शिक्षा तो लोगों को समझ नहीं आती, परन्तु सम्बन्धों की शिक्षा अवश्य अच्छी लगती है।

मित्रवत सम्बन्ध :- पति पत्नी का सम्बन्ध मित्रवत सम्बन्ध होना चाहिए, क्योंकि न तो पत्नी पैर की जूती है और न ही पति परमेश्वर है। पत्नी तो सृजनहार है, परिवार की पालनहार है। मातृव का आदर्श है, और पति उसका हर तकलीफ और दुख में संरक्षक है। यह सम्बन्ध मित्रवत तभी बन सकता है, जब दोनो पति पत्नी एक दूसरे को विकसित करें। दोनों का लक्ष्य एक दूसरे को शारीरिक, मानसिक और हार्दिक रूप से उन्नत करना हो, एक दूसरे के गुणों को विकसित करना हो।

छोटे छोटे स्नेह वा सम्मान, सराहना के एक दूसरे के लिए शब्द, छोटे छोटे कभी कभी अपनी हैसीयत के अनुसार उपहार, इस रिश्ते में और भी मिठास भर देते हैं। यह क्रियाएं नौजवान दम्पतियों के लिए ही नहीं, बूढ़े से बूढ़े दम्पति भी ऐसे साधनों से बुढ़ापे को बहुत मधुर बना सकते हैं।

(सुरजीत बराड़)

सुनने की आदत डालो, ताने मारने वालों की कमी नहीं है, मुस्कराने की आदत डालो, रूलाने वालों की कमी नहीं है, ऊपर उठने की आदत डालो, हतोत्साहित करने वालों की कमी नहीं है, गलत का विरोध करने की आदत डालो, सत्य का साथ देने वालों की कमी नहीं है, धनवान बनने के लिए एक एक क्षण का संग्रह करना पड़ता है और गुणवान बनने के लिए एक-2 क्षण का सदुपयोग करना पड़ता है।

बाकि पेज़ 16

2. डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर या स्टोन डिसॉर्डर से ग्रसित लोगों को समय पर किडनी की स्क्रिनिंग भी कराते रहना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए। डिहाइड्रेशन से बचकर किडनी के खतरे को कम किया जा सकता है।
3. शुगर हो या न हेा किसी भी जख्म या घाव का समय रहते उपचार कराना चाहिए। लंबे समय तक घाव रहने से किडनी की बीमारी की आशंका बढ़ जाती है।
4. यूरिन में प्रोटीन और बल्ड टेस्ट साल में एक बार कराकर किडनी की बीमारी से बच सकते है।
5. 40 की उम्र के बाद स्वस्थ होन पर भी शरीर के सभी अंगों की जांच कराकर किडनी की बीमारी से बच सकते है।

जीवन पथ कुछ और है।

मनुष्य जन्म लेकर मनुष्य के लिए मनुष्य जीवन का अर्थ समझना कठिन है। उसे अपनी विरासत से ही नीच भावनाओं, अहंकार की शक्तियां इतनी मात्रा से मिलती हैं कि ज्यों ज्यों वह बड़ा होता जाता है, वह जीवन की सच्चाईयों को देखने के अयोग्य होता जाता है। यदि वह मोटे मोटे पापों में लिप्त न भी हो और दुनियां की नज़र में एक शरीफ इंसान भी कहलाता हो, तो भी जीवन के विषय में वह घोर अंधकार की अवस्था में रहता है। बहुत बड़ा ज्ञानी होकर, विद्वान होकर, फिलासफर होकर, मनोविज्ञानी होकर भी वह जीवन के बनने और बिगड़ने के विषय में अज्ञानी रहता है। अपने जीवन का लक्ष्य प्राय: प्रत्येक मनुष्य धन, कमाना, शोहरत हासिल करना, बीवी बच्चे रखना और सारी उमर उनके लालन पालन में बिताना ही समझता है।

मोटे पाप तो फिर भी दिखाई दे जाते है और डनहे बुरा भी समझा जाता है, परन्तु धन का बंधन और बच्चों का बंधन और अनुचित मोह भी जीवन को कितना नीचे ले जाते हैं, यह समझना कठिन है। यह शरीफों के आत्मिक रोग हैं। धन मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए एक आवश्यक साधन है। समाज में आत्म सम्मान से जीने का भी एक ज़रिया है, परन्तु धन कमाते कमाते उसको ही लक्ष्य बना लेना, उमर की भी कोई सीमा न समझना, उसके लिए धोखा, कपटता करना, किसी का हक मारने में भी कोई गुरेज़ न करना, आप करोड़ों के मालिक होकर भी दूसरे से धन जायदाद हासिल करने के लिए, उसका हक मारने के लिए अपने निकटी संबंधों की भी परवाह न करना, मनुष्य को जीवन के मार्ग से दूर ले जाता है। केवल यही नहीं अथाह सम्पति रखकर उसमें से किसी भलाई के काम में खर्च न कर सकना, किसी जरूरत मंद की जरूरत को अनुभव न करना, केवल और केवल धन इकट्ठा करते रहना जीवन के प्रति घोर अन्धता है। जबकि यह सच्चाई ठोस है कि धन जायदाद केवल इस दुनियां में ही रह जाने वाली वस्तुएं हैं, कोई बड़े से बड़ा धनी एक सूई भी इस संसार से

नहीं ले जा सकता, परन्तु इस सच्चाई को न समझना पूर्णता मूर्खता है। इसीलिए यह कहा गया है कि सूई के छेद में से हाथी का निकलना तो सम्भव है, परन्तु धन अनुरागी मनुष्य का धर्म की दुनियां में प्रवेश सम्भव नहीं।

दूसरा शरीफ़ आदमियों का रोग मोह और विशेष रूप से संतान का मोह है। धन कमाकर बच्चों को भेंट कर देना या उनके लिए बूढ़ी उम्र तक धन कमाते जाना, जायदाद इकटठे करते जाना निपट मूर्खता है। विद्वानों को कहना है कि संतान के लिए धन इकटठा करनना पागलपन हैं, उनको योग्य बनाना माता पिता का कर्तव्य है। यदि संतान योगय है तो वह अपने लिए बहुत धन कमा लेगी, यदि नालायक है तो आपका बनाया हुआ सारा धन गंवा देगी। दोनों सूरतों में ही संतान के लिए धन कमाना और इकट्ठा करना निपट मुर्खता है। परन्तु धन अनुरागी और संतान अनुरागी जन के लिए यह समझना असम्भव सा हो जाता है। वह तो अपने बच्चों को आसमान से उतरे फरिश्ते अनुभव करता है और दूसरों के बच्चों का हक छीन कर भी उनको देना चाहता है, कितनी बड़ी विडम्बना। धन और संतान के मोह में मनुष्य इस कदर पागल हो जाता है कि वह जिस समाज को लेकर उसका जीवन है, उसके लिए छोटी उंगली भी हिलाना नहीं चाहता। धन के आगे, संतान के आगे कोई रिश्ता उनके लिए महत्त्व नहीं रखता। यह एक एक मनुष्य के लिए, शरीफ कहलाने वाले मनुष्य के लिए घातक रोग हैं।

संतान अनुराग से परिचालित होकर मनुष्य केवल संतान के शरीर से प्यार करता है, कुछ न कुछ पढ़ाना लिखना चाहता है या उसके लिए धन के अम्बार खड़े कर देना चाहता है, परन्तु उसके आगे उनकी आत्मिक भलाई के लिए सोचने में असमर्थ है। ऐसा करके वह बालू रेत के ढेर पर खड़ा होता है और संतान को खड़ा रखता है और वह रेत खिसकती है तो सब कुछ बर्बाद हो जाता है।

बच्चो के भीतर कृतज्ञता, श्रद्धा, सहानुभूति और पर सेवा के भाव न जगाने से स्वयं भी उनकी कृतघ्नता वा ज़ालिम व्यवहारों का शिकार होता है, परन्तु जिस संतान को उसने मालिक बना लिया है उनसे बुरे व्यवहार पाकर भी उनके ही आगे दुम हिलाता नज़र आता है। मनुष्य की कितनी बड़ी कृपा पात्र अवस्था है.....।

देवात्मा सत्गुरू ने अपनी ज्योति में जिन जिन आत्माओं को उपरोक्त महा रोगों की भयानक अवस्था दिखाई है, उनका जीवन लक्ष्य बदल गया है, वह सच्चे अर्थो में संतान के हितकारी बने है। उन्होंने धन भी कमाया, संतान को पढ़ाया लिखाया, योग्य बनाया, परन्तु अपने धन की सफलता सेवा में लगाकर की और उन्होंने अपने माता पिता द्वारा कमाए धन को हड़पना नहीं चाहा, बल्कि उसको सेवा के कार्यो में लगाने में सहयोगी बने व इससे भी अधिक माता पिता द्वारा दिखाए उच्च आर्दशों को सामने रखकर अपने द्वारा कमाए धन को भी सेवा के कार्यो में कुछ न कुछ लगाकर जीवन की सफलता समझते हैं। सत्गुरु धन्य हैं, जिन्हेांने ऐसी मशाल प्रज्जवल की है, जो मोह के अंधकार में लिप्त आतमाओं को सही मार्ग दिखाती है और उन्हें जीवन का सही लक्ष्य दिखाती है।,

सुरजीत बराड़

शुभ संग्राम

मल्लेका (सिरसा) श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भटिंडा से 25 जनवरी को मल्लेका पहुँचे। श्रीमान मेहर सिंह जी और श्रीमान जीत सिंह जी आदि को पहले सूचित किया जा चुका था। धर्म सम्बन्धियों ने मन्दिर की बहुत अच्छी सफाई और बिछाई की हुई थी। सभा का समय रात 8.00 बजे रखवा गया। पहली सभा में ही बहुत अच्छी गिनती में श्रद्धालु और सेवक पहुँचे।

इस सभा में देव धर्म की दूसरे धर्मों से भिन्नता और जरूरत बारे ब्यान किया गया। मिथ्या धर्मों द्वारा जो बर्बादी आ रही है, उसकी घटनाएं बताई गई। कई कहलाने वाले गुरू वा महापुरुष जेलों में हैं। राजनैतिक नेता भी भृष्टाचार के कारण जेल खानों में बन्द हैं और किस क़दर रुसवा वा ख़्वार हो रहे हैं। यह सब नारकीय लीला मनुष्य के नीच सुख अनुरागों द्वारा पैदा की हुई है। इसलिए मनुष्य मात्र को क्या अपने लिए, क्या अपने पारिवारिक जीवन के लिए, क्या समाज के लिए ज्योति और शक्ति प्रदाता विशेष वातावरण की आवश्यकता है, जो केवल परम पूजनीय, भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से उत्पन्न होता है।

अगले दिनों के लिए सुबह शाम का समय नियत किया गया। सुबह को 8.30 बजे और रात को 8.00 बजे का समय रखवा गया। दिन के समय श्रीमान जी कई धर्म सम्बन्धियों को मिलकर उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न करते रहे। एक दिन मन्दिर के दरवाजे और खिड़कियों को भी पेंट आदि करने का प्रोग्राम बनाया।

इन सभाओं में नेचर के विशाल रूप, नेचर के नियमबद्ध रूप, नेचर के स्वयम्भू रूप आदि पर ब्यान किया गया। नेचर सदा से क्यों है? नेचर का जड़ और शक्ति का अपनी मात्रा में स्थिर रहना बताया गया। नेचर में भौतिक order के साथ अध्यात्मिक और मानसिक order के विषय में बताया गया। जिसके द्वारा महान वैज्ञानिक, परोपकारी और अध्यात्मिक जगत के सूर्य देवात्मा का आर्विभाव हुआ।

श्रीमान जी ने श्रद्धा, कृतज्ञता और हमदर्दी के सात्विक भावों के विषयों पर ब्यान किया। सुन्दर वातावरण पैदा होता रहा। नौजवान विद्यार्थियों को माता पिता को प्रणाम करने की प्रेरणा दी, जिसका अच्छा रिस्पौंस मिला। तीन नये नौजवान आते रहे और धर्म का साधन भी करते रहे।

एक सभा में मनुष्य के भीतर के परिचालक नीच सुख अनुरागों, अर्थात नशा सुख अनुराग, काम सुख अनुराग, धन सुख अनुरागों की भयानक तस्वीर दिखाने वाले वातावरण की यक्ता महिमा दिखाई गई। जिसमें अधिकारी मनुष्यात्माओं में हितकर परिवर्तन आता है।

सभापति जी ने एक सभा नीच घृणा के विषय में करवाई। प्रिंसीपल सरताज सिंह जी ने श्रीमान जी के पास एक विशेष जन को मिलने के लिए भेजा, जिसने सभा के बाद अपने घर में नीच घृणा के दृश्यों के विषय में खुलकर बात की। श्रीमान जी ने अपनी योग्यता के अनुसार हमदर्दी का प्रकाश किया और कई हितकर सुझाव दिए।

अन्तिम दिन की सभा 28.1.2019 को हुई। 600 रूपये दान प्राप्त हुआ।

कुछ सभाओं में लड़कियां विशेष रूप से भजनों का गान करती रही, जिसके लिए श्रीमान मेहर सिंह जी जोरदार प्रेरणा करते रहे।

<u>संगरूर :-</u> हर साल की तरह इस बार भी देव समाज (G) साधन मन्दिर में सत्संग (सभा) का प्रोग्राम रखवा गया। जिसके लिए श्रीमान डा० नवजोत जी भी प्रेरणा देते रहे। यह प्रोग्राम 23.2.19 से 25.2.

19 तक चला जिसमें डा० साहब के परिवारिक सदस्यों व अन्य सम्बन्धित जनों ने भाग लिया। इसमें डा० साहब के ननिहाल परिवार व श्रीमान सीता राम जी के भाइयों के परिवारिक जन भी शामिल होते रहे। शहर के टाटा कैन्सर होसपिटल के बड़े डाक्टर व पुराने धर्म सम्बन्धी भी आते रहे। इसके अलावा इन सभाओं में शामिल होने के लिए चण्डीगढ़, डेराबस्सी, गोनियाना, बठिण्डा, मल्लेकां, केसूपुरा आदि से भी धर्म सम्बन्धी पहुँचे। धर्म सम्बन्धियों के ठहरने व खाने पीने का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया गया। यहाँ पर सब सेवाओं में डा० साहब के परिवारिक जनों ने बड़ी खुशी व उत्साह से भाग लिया। सभाएँ करवाने की श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कृपा की। भजनों का गान श्रीमान गुरदेव राज जी व श्रीमति डा० डिम्पल कालड़ा जी ने किया। इस सभाओं में 35-40 के करीब हाजरी थी, एक सभा में 60 से ऊपर की हाजिरी भी थी।

एक भजन के गान के बाद सभापति जी ने फरमाया कि हमारे विकास के लिए विरासत और बाहरी वातावरण के नियम काम करते है। विरासत को हम बदल नहीं सकते लेकिन उच्च संगत या वातावरण में रह कर विरासत में मिली अच्छी पूंजी को बचाया और उसका विकास किया जा सकता है। सभापति जी ने श्रीमान सीताराम जी व अन्य कई जनों के उदाहरण देकर बताया कि जहाँ उच्च वातावरण के मिलने से पहले जीवन तबाह हो रहे थे वहीं उच्च संगत के प्रभावों में आकर उनके जीवनों के कितने ही पहलुओं में आश्चर्यजनक तबदीली आयी।

<u>दूसरी सभा 24.2.2019 सुबह 10.00 बजे रविवार। :-</u> श्री देवगुरू भगवान की पावन छवि का फूलों के हार द्वारा अर्चन किया गया। देव स्तोत्र का गान व व्याख्या की गयी। 'अद्वितीय है रूप तुम्हारा' भजन के गान के बाद सभापति जी ने ब्यान किया कि दुनियाँ के और धर्मों में सब सम्बन्धों को छोड़ कर अपने अपने मनोनीत ईश्वर व देवी देवता का सिमरण करना, उनकी पूजा आराधना और उससे जुड़ना धर्म माना जाता है। परन्तु धर्म सम्बन्धों से कटना नहीं, उससे भागना नहीं, बल्कि उनसे अच्छे तरीके से जुड़ना/उच्च भावों से जुड़ना है। धर्म का पैमाना ये नहीं है कि कौन किसको मानता है, कैसी पूजा करता है, कितनी पूजा करता है। धर्म का कारज है कि हमारे अन्दर दूसरों के दुख-दर्द का, उनके सन्मान, स्नेह आदि का ध्यान व भाव बढ़ने लगता है। इससे भी आगे दया, श्रद्धा, शुक्रगुजारी के भाव और भी धर्म के उत्तम भाव हैं।

<u>तीसरी सभा, 24.2.2019, दोपहर 3.00 बजे :-</u> एक भजन 'अहो भाग्य सतगुरू तुम्हें मैने पाया' का गान किया गया। इस सभा में कुछ समय गोनियाना से गौतम जी ने ब्यान किया कि नेचर में नियमों का राज है। हर पदार्थ हर वजूद में नियम काम करते हैं। और नेचर का एक नियम यह है कि हर अस्तित्व से असर निकलते हैं और वो असर दूसरों को प्रभावित करते हैं।

गुरू महाराज के जीवन, उनकी शिक्षा, उनकी वाणी से भी असर निकलते हैं जिससे कि बहुतों के जीवन में हैरानीजनक, शुभकर परिवर्तन हुए। बहुत ही सुन्दर तरीके से श्रीमान सरदार हरनाम सिंह जी जो कि बहुत बड़े घराने के थे व उनकी राजाओं महाराजाओं से रिश्तेदारी थी उनका व श्रीमान अनोख सिंह जी नम्बरदार, फेरू शहर के जीवन परिवर्तन के द्वारा गुरू महाराज के असरों को समझाया गया।

इसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भी ब्यान फरमाया कि अपनी तरफ से कुछ घाटा सहकर भी जो जन दूसरे का फायदा करता है वह अपना स्वार्थ घटाता है। उन्होंने आगे बताया कि दूसरों के दिल को जीतने का सच्चा तरीका है कि दूसरों को प्रेम किया जाए, उनको माफ किया जाए और उनकी सेवा की जाए इसके लिए उन्होंने मदर टैरेसा का व और भी

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

कई उदाहरण पेश किये।

इस सभा के अन्त में श्रीमान सीता राम जी को हार व फूलों के द्वारा उनकी फोटो रखवकर सन्मान प्रदर्शन किया गया।

चौथी सभा, 24.2.2019 रात्रि 8.00 बजे। :– बहुत ही सुन्दर भावों द्वारा प्रार्थना विषयक 2 भजनों का गान किया गया। उसके बाद सभापति जी ने ब्यान किया कि हम सब चिन्ताएँ और क्रियाएँ हमारे अन्दर के भावों द्वारा करते हैं। नीच भाव नीच लीला प्रकट करते हैं व उच्च भावों द्वारा स्वर्गीय दृश्य उत्पन्न होते हैं। काम वासना का अनुचित ज़ोर(भाव) महा नारकीय लीला पैदा करता है, स्वार्थ भाव बढ़ता है तो हम भेड़ियों जैसा व्यवहार करते हैं।

उच्च भावों या निर्माणकारी भावों से हमारी निर्माणकारी शक्ति बढ़ती है। और निर्माणकारी भाव हैं जैसे श्रद्धा, शुक्रगुजारी, दया, हानि परिशोध आदि। श्रद्धा भजन को देखते–देखते श्रद्धावान उसकी रौ में बहने लग जाता है, उसी रूप में ढलने लग जाता है और क्या से क्या बन जाता है जैसे कि बोसबेल डा० जानसन के गुण लिखते लिखते खुद एक बहुत बड़े लेखक बन गये। सिक्ख इतिहास में भाई लहणा जी श्री गुरू नानक देव के इतने श्रद्धावान हो गये कि खुद गुरू अँगद देव बन गये। इसी तरह शुक्रगुजारी के भावों की भी स्वर्गीय लीला के उदाहरण पेश किये।

पांचवी सभा, 25.2.2019 सुबह 9.00 बजे :– भजन गान के बाद सभापति जी ने नीच घृणा के बारे में फरमाया कि चूँकी हम सब सुख के भावों से चलते हैं इसलिए जब भी हमारे किसी भी सुख में कोई रुकावट पैदा हो, हमें गुस्सा अथवा नीच घृणा होती है। ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा, आदि इसी नीच घृणा के पार्ट हैं। रूठना, न बोलना, दूरी बनाना आदि गुस्से के प्रारम्भिक लक्षण हैं। नीच घृणा (गुस्से) की आग से हमारे उच्च भावों की पूँजी को हानि पहुँचती है। आग लगती है। गुस्से में हम अपनी और दूसरों की हानि करने के लिए मजबूर होते हैं। एक पत्नी ने गुस्से की आग में अपने आप को आग लगा ली। एक पिता को किसी बात पर इतना गुस्सा आया कि उसने अपने मासूम बच्चे को उसकी छोटी सी गलती पर जलते तन्दूर में डाल दिया। सभापति जी ने आगे बताया कि इस नीच घृणा की प्रतिरोधक दवाई उच्च भाव हैं। यह दान गुरू महाराज के देव प्रभावों से प्राप्त होता है। उसमें अपने बढ़े हुए नीच सुखों व उनसे उत्पन्न घृणा की तस्वीर समझ आती है व उच्च भावों के लिए प्रेरणा व बल मिलता है। यह सभी सभाएँ बहुत प्रभावशाली रहीं। कुछ सभाओं में श्रीमान मेहर सिंह जी उच्च प्रभावों में अपने जीवन में आए बहुत अच्छे परिवर्तन की कथा भाव विभोर होकर सुनाते रहे जिससे श्रोतागण भी प्रभावित हुए व गुरू महिमा को महसूस करते रहे।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts